Vol 4 Issue 2 Aug 2014 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-4 | Issue-2 | Aug-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

GRT

हिंदी साहित्य को मराठी संतों का योगदान

भगवान आदटराव

संतोष भीमराव पाटील महाविद्यालय , मंद्रुप, तह. द. सोलापुर, जि. सोलापुर.

सारांश :-मराठी और हिंदी भारोपीय परिवार की आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ हैं। दोनों भाषाओं का जन्म संस्कृत के गर्भ से हुआ है। संस्कृत भाषा को दोनों (हिंदी – मराठी) की जननी कहा जाता है। दोनों भाषाओं का प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक साहित्य अत्यंत समृध्द है। भाषा तथा साहित्य के हर क्षेत्र में दोनों भाषाएँ अपनी प्रगति कर रही है।

प्रस्तावना :

प्राचीन काल का अवलोकन करने के बाद ज्ञात होता है कि मराठी भाषी संत कवियों ने हिंदी भाषा में लिखकर हिंदी की सेवा की है। प्राचीन काल में महाराष्ट्र प्रदेश में हिंदी भाषा के दो रूप प्रचलित थे। एक वह रूप था जिसमें अरबी–फारसी शब्दों के साथ–साथ स्थानीय भाषाओं का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता था। भाषा के इस रूप को दक्खिनी, हिन्दी, उर्दू अथवा रेखता कहा गया है। भाषा का दूसरा रूप वह था जिसमें खड़ी बोली, ब्रज आदि के साथ मराठी शब्दों का प्रयोग होता था। भाषा के इस रूप को 'मराठी–हिंदी' के नाम से जाना जा सकता है। भाषा के इस दूसरे रूप को देखकर कहा जा सकता है कि बिगड़े रूप में ही क्यों न हो, खड़ी बोली को उत्तर भारत के कवियों से पूर्व पद्य भाषा में व्यवहृत करने का श्रेय मराठी भाषी संत कवियों को जाता है।

मराठी संत कवियों ने हिंदी में जो कुछ लिखा होगा उसकी खोज करना अत्यंत आवश्यक है। वैसे तो इस संदर्भ में कुछ संकेत मिलते है, लेकिन खोज के उपरांत और भी बातें सामने आने की संभावनाओं को नकारा नहीं जा सकता। प्रारंभिक खोज के उपरांत कुछ हस्तलिखित प्रतियाँ प्राप्त हो गई है। छुटपुट तथा बिखरी रचनाएँ तो बहुत सारी है। अगर इन बिखरी रचनाओं का संकलन कर इन पर गवेषणात्मक काम किया जाए तो बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। वैसे देखा जाए तो यह अध्ययन का बहुत बड़ा व्यापक क्षेत्र है। इस पर स्वतंत्र रूप से शोध–कार्य किया जा सकता है और अन्तर्भारतीय स्नेह बंध की दृष्टि से इस प्रकार के विषय पर गवेषणात्मक अध्ययन करने की आवश्यकता है। प्रस्तुत आलेख इसी उद्देश्य को सामने रखकर लिखा गया है। मराठी संत कवियों ने अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रभाषा हिंदी में लिखकर जो हिंदी की सेवा की है, वह सराहनीय है। प्रस्तुत आलेख में मराठी भाषी संत कवियों की हिंदी सेवा को हिंदी भाषियों तक पहुँचाने का दायित्व पूरा करने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रथमः महाराष्ट्र के सुपुत्र संत नामदेव की हिंदी रचनाएँ तथा उनसे प्रेरित हिंदी संत कवि तथा साहित्य को देख लेना आवश्यक है। वैसे तो नामदेव से पहले मराठी भाषा के आदि ग्रंथकार मुकुंदराज तथा संत ज्ञानेश्वर के समय भी हिंदी में लिखे छुटपुट पद मिलते है। यहाँ मराठी के संत कवि नामदेव के समकालीन तथा परवर्ती मराठी भाषी संत कवियों की हिंदी सेवा को आरंभ मानकर उनका विवेचन किया जा रहा है। इसका मुख्य कारण यह है कि संत नामदेव ने जिन हिंदी पदों की रचना की है उन्हें देखते हुए पूर्ववर्ती रचनाकोरों का उतना महत्त्व नहीं है।

मराठी संत कवि नामदेव के कालखण्ड के बारे में विद्वानों में मतभेद है। मराठी अनुसंधाताओं ने नामदेव का कालखण्ड 1992 से 1272 ते निर्धारित किया है। संत नामदेव उत्तर भारत का भ्रमण करनेवाले पहले महाराष्ट्रीय संत कवि माने जाते है। अनुसंधाताओं ने नामदेव की हिंदी–मराठी रचनाओं की समरूपता को अनेक प्रमाणें द्वारा सिध्द किया है। ''यह निर्विवाद सत्य है कि हिंदी निर्गुण काव्य की परंपरा का प्रवर्तन संत नामदेव की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है यही इस बात का ठोस प्रमाण है। अतः मराठी संत कवि नामदेव को हिंदी संत परंपरा के आदि गुरू कहना अनुचित न होगा।

मराठी भाषी कवि संत नामदेव की बानी में अनुभव प्रमाण्य, नामस्मरण, गुरूकृपा, बाह्याचार आदि का तीव्र विरोध और सहज भक्ति का समर्थन देखा जा सकता है। गुरू नानक ने सत्यनिष्ठा हेतु प्राण न्यौछावर करने वाले सिध्द जीवन को जिस मिट्टी में अंकुरित किया उस मिट्टी में सत नामदेव ने प्रथम हल चलाया था। कहा जाता है कि नामदेव चौदहवीं शती के पूर्वार्ध में पंजाब गए थे। वहाँ आरह वर्षों से अधिक समय तक रहकर पंजाब के जनजीवन में धर्म जाग्रति का रंग भरते रह। गुरूनानक तथा उनकी परंपरा में आनेवाले गुरूओं ने नामदेव के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की है। सिक्खों के चतुर्थ गुरू अर्जुनदेव ने ''नाम नारायणे नाही भेद'' कहकर नामदेव को नाराण स्वरूप माना है। सिक्खों के गुरूग्रंथसाहब में नामदेव के इकसठ पद समाविष्ट हैं। यह कहा जाता है कि गुरु नानक के विचार भण्डार के कुछ रत्न उन्हें नामदेव

से ही मिले है।

गुजरात के कवि नरसी मेहता तथा हिंदी की मीराबाई पर भी नामदेव का प्रभाव दिखाई देता है। इसी कारण नामदेव की आर्तता से मीराबाई की प्रभु से मिलने की व्यथा अपना रिश्ता जोडती है। हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास लिखनेवाले डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त ने अपनी वैज्ञानिक दृष्टि से नामदेव के कार्यकर्तृत्व का योग्य मूल्यांकन किया है। उनके मतानुसार हिंदी संत कवियों की प्रणय भावना महाराष्ट्रीय संतों की भावना के अनुरूप है न कि सूफियों के। हिंदी में इस काव्य–परंपरा का प्रवर्तन सर्वथा मौलिक रूप में नहीं हुआ। यह परंपरा मराठी से विकसित होती हुई हिंदी में पहुँची है। हिंदी में इसे प्रचलित करने का श्रेय भी नामदेव को जाता है, जिन्होंने एक ओर उत्तर भारत में दीर्घकाल तक रहकर अपने विचारों का प्रचार किया, तो दूसरी ओर हिंदी में विपुल मात्रा में पदों की रचना भी की। उनके पदों में सत काव्य की प्रायः सभी विशेषताएँ मिलती है। केवल हिंदी संत अथवा निर्गुण काव्य–परंपरा का ही नहीं, अपितु समस्त हिंदी भक्तिधारा का मूलस्त्रोत नामदेव की बानियों में देखा जा सकता है। जैसे–

''मैं बऊरी रामु भ्रतारू। रचि ताकऊ करंऊ सिंगारू।।
भले निंदऊ भले निदं लोगु। तनु राम पिआरे जोगु।।''

नादेव में उत्तरी भारत के संत मत की सारी विशेषताएँ विद्यमान है। अतः नामदेव को भारत में निर्गुण भक्ति मत का प्रथम प्रचारक एवं प्रवर्तक तथा कबीर आदि संतो का प्रथ–प्रदर्शक माना जा सकता है। नामदेव का महत्त्व प्रमाणिक करने का प्रमुख साधन संपूर्ण हिंदी संत काव्य ही है। कबीर इस संत परंपरा के श्रेष्ठ कवि थे। उन्होंने नामदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की है। नामदेव का कबीर, रैदास आदि संतों अपने पदों में उल्लेख किया है। जैसे–

''जागे सुक उध्दव हणवंत जागे ले लंगूर।
संकट जागे चरन सेव कलि जागे नामा जयदेव।
नामदेव, कबीर, त्रिलोकन सधना सैनुतरे।
कहि रविदास सुनहुरे संतो हरिजिउ ते सभै सरै।''

हिंदी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल के अंतर्गत प्रायः सभी विध्दानों में नामदेव का आदर के साथ उल्लेख किया है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा है– ''उत्तर भारत के अनेक शक्तिशाली साधको को (कबीर, नानक, रैदास, दादुदयाल आदि) नामदेव प्रेरणा दी और आंडबरहीन, भेदभावरहित निर्गुण भक्तिधारा ने संपूर्ण देश की विचारधारा को प्रभावित किया। नामदेव ने पंजाब में घूम घूम कर भक्ति का प्रचार किया। इसी कारण समस्त हिंदी संत कवि नामदेव के द्वारा पत्र निर्देश की गवाही देते है। संत मत की श्रेष्ठ विभूति तथा प्रचारक कबीर नामदेव का श्रध्दापूर्वक स्मरण करते है। नामदेव निर्गुण संप्रदाय के बहुत बड़े संत थे। कबीर से पहले होने के कारण नामदेव को संत संप्रदाय की पृष्ठभूमि उपस्थित करने का श्रेय दिया जाता है''

मराठी साहित्य में संत एकनाथ का अनन्य साधारण महत्त्व है। महाराष्ट्र में उनका नाम और काम उज्ज्वलता प्राप्त कर चुका है। एकनाथ तथा गोस्वामी तुलसीदास का कालखंड लगभग एक है। एकनाथ ने भी उत्तर भारत का भ्रमण किया था। कहा जाता है कि एकनाथ कुछ दिन काशी में गोस्वामी के साथ रहे थे। जिस तरह उत्तर भारत में गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरित मानस' भी पूजा योग्य है। एकनाथ ने काशी में रहकर अपनी प्रकांड विद्वत्ता का परिचय दिया था। जिससे प्रसन्न होकर काशी के पंडितों ने एकनाथ को सारे सम्मान दे दिये थे। इतना ही नाहीं, वहाँ उनके महान ग्रंथों के साथ उनकी सम्मान यात्रा भी निकाली थी। इस प्रकार महाराष्ट्र भूमि पुत्र को हिंदी भूमि ने सम्मामित किया था। एकनाथ का गौरव स्वयंसिध्द घटना है। ऐसे रसिक मान्य एकनाथ उत्तरी भारत में जनप्रिय हुए थे। उस समय हिंदी भाषी क्षेत्र में एकनाथ के कई शिष्य हो गए थे। उनके काशी निवास के दौरान एकनाथ द्वारा लिखित ग्रंथ शायद वहाँ के भक्तों तथा उनके अनुयायियों ने प्रसारित किए होंगे।

एकनाथ ने भागवत की रचना वाराणसी मुक्तिक्षेत्र के आनंदभवन में मणिकर्णिका महातीन पर समाप्त की थी। एकनाथ एक भाषा से अन्य भाषा में अनुवाद करने में कुशल थे। एकनाथ तथा तुलसी दोनाकें के ग्रंथों में विचार एवं अध्यात्म की दृष्टि से अत्यधिक साम्य है। दोनाके के जीवन में भी काफी समानता है। अतः मन में जिज्ञासा उत्पन्न होना स्वाभाविक है कि तुलसी कृत 'मानस' तथा एकनाथ कृत 'भावार्थ रामायण' इन दोनों में से किस ग्रंथ को मौलिक माना जाए। दोनों ग्रंथों का विषय एक ही है। दानों ग्रंथों में विषय प्रतिपादन, चरित्र–चित्रण की दृष्टि कसे काफी समानता है। अतः यही कहना तर्कसंगत होगा कि दोनों का एक दूसरे पर गहरा प्रभाव है। दोनों साथ रहते थे, जिससे दोनों एक दूसरे से काफी प्रभावित है।

एकनाथ के संदर्भ में कवि केशव ने ठीक कहा है कि हमें एकनाथ के ग्रंथी की उत्तरी भारत में खोज करनी चाहिए। हो सकता है कि एकनाथ ने हिंदी ग्रंथों की चना की हो। इस संदर्भ में आरंभिक खोज करने के प्रयत्न में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना की ओर से प्रकाशित तथा डॉ. धीरेन्द्र ब्रह्मचारी द्वारा संपादित ग्रंथ अधिक महत्त्वपूर्ण है। बिहार राज्य ने प्राप्त प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की विस्तृत सूची दो खण्डों में तैया की है। इस सूची के दूसरे खण्ड में एक महत्त्वपूर्ण उल्लेख है। हस्तलिखित विवरण को पढ़ने के बाद उसकी भाषा के संबंध में निश्चित निर्णय करना असंभव है। हस्तलिखित की भाषा न उडिया है न असमी, वास्तव में वह भाषा मराठी ही है। वह ग्रंथ एकनाथ द्वारा लिखित रूक्मिणी स्वयंवर ही है। रूक्मिणी स्वयंवरकी इसी प्रति के कारण एकनाथ तथा अन्य मराठी भाषी कवियों के ग्रंथ उत्तर भारत में प्राप्त होने की आशा पल्लवित हो रही है।

संत तुकाराम के उचय कोटी के कवि माने जाते है। ''हिंदी भाषा में पद लिखनेवाले में मराठी संत कवि तुकाराम का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। तुकाराम की हिंदी रचनाएँ बडी भावपूर्ण हैं।'' संख्या की दृष्टि से तुकाराम की हिंदी रचनाएँ बहुत अधिक नहीं है। तुकाराम का समग्र काव्य ''तुकाराम की गाथा'' नाम से जाना जाता है। इसमें लगभग पाँच हजार अभंग (पद) हैं इस गाथा में कुछ हिंदी पद भी मिलते है।

तुकाराम लिखित हिंदी पदों की संख्या लगभग पचारस है। तुकाराम की वेदना और तड़प की समानता शायद ही अन्य भाषा का कोई कवि कर सकता है। तुकाराम के उपलब्ध हिंदी पदों में काफी विविधता है। उन्होंने 'गौळण' अर्थात् कृष्ण गोपी प्रेमगीत (लीलागान) लिखे है, जो बडे ही भावपूर्ण है। कबीर की तरह तुकाराम की मूल संवदेना है। उन्होंने अपने पदों में पाखण्ड विराध के अतिरिक्त नीति और भक्ति का उपदेश भी दिया है। तुकाराम का साहित्य (काव्य) अपनी स्पष्टता, सुबोधता और अनूठे भाव के साथ भक्ति का एक अनुपम खजाना है। तुकाराम की शिष्या तथा मराठी की श्रेष्ठ संत कवियित्री बहिणाबाई ने तुकाराम को 'भागवत धर्मरूपी मंदी के कलश' की उपमा देकर गौरवान्वित किया है। उनका हिंदी पद इस प्रकार है–

''हरी बिन रहिया न जाए जिहिरा।
कब की थोडी देख रहा।।''

छत्रपति शिवाजी महाराज के गुरू समर्थ रामदास महाराष्ट्र में अद्‌भुत प्रतिभासंपन्न संत पुरूष थे। इस युग का द्रष्टा साधु पुरूष की अगाध प्रतिभा, अनुपम देश–निष्ठा, बेजोड राजनीति आज भी सभी भारतीयों को मार्गदर्शन देती है। रामदास कृत 'दासबोध' हजारों का पथ प्रदर्शक है। समर्थ रामदास ने भी भारत भ्रमाण किया था। स्वामी रामदास कई वर्षों तक हिंदी प्रदेश में रह चुके थे। अतः उनका हिंदी के प्रति लगाव रहना स्वाभाविक है। रामदास का छोटा सा ग्रंथ 'तिर्थ स्थली' इस दृष्टि से महत्तवपूर्ण है। इस ग्रंथ के अनुसार समर्थ रामदास ने समूचे भारत के तीर्थस्थलों की यात्रा की थी। उन्होंने वाराणसी, प्रयाग, गया, अयोध्या, मधुरा, वृंदावन, द्वारका आदि स्थानों का भी दर्शन किया था। संभवतःइस यात्रा के दौरान उन्होंने हिंदी रचनाएँ लिखी हो। दुर्भाग्य से आज उनके कुछ स्फूट पद रचनाओं के सिवा हमारे पास कुछ नहीं है। धुलिया के समर्थ वागदेवता मंदिर की पोथी शालाओं में अगणित हस्तलिखित ग्रंथ है। उनकी परख के उपरान्त केवल सौ के करीब पद प्राप्त हुए है।

मराठी भक्ति काव्य का भण्डार अगणित संत भक्तों की विमल वाणी से समृध्द हुआ है। ज्ञानेश्वर की अमृत वाणी ने उसे अलंकृत किया। नामदेव की भावमयी भक्ति ने उसे मधुरता प्रदान की, तुकाराम की अक्खड अभंग संपदा ने उसमें जोश भर दिया। एकनाथ की विशाल दृष्टि और पांडित्य ने उसे प्रशस्त किया। रामदास की समर्थ पंक्तियों ने उसे शक्तिशाली बनाया। मुक्ताबाई, जनाबाई, बहिणाबाई आदि की भावसुंदर पदावलियों ने उसमें मिठास भर दी है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि मराठी संत कवियों ने हिंदी में लिखकर हिंदी के संत साहित्य को समृध्द ही नहीं किया अपितु उनका दिशा निर्देशन का भी काम किया है।

संदर्भः–

1.हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. रामकुमार वर्मा
2.विद्रोही मुकाराम – डॉ. आ.ह. साळुंखे
3. संत साहित्याची सामाजिक फलश्रुली– ग.वा.सरदार
4. तुकाराम दर्शन – डॉ. सदानंद मोरे
5. संत साहित्य संदर्भ कोश– डॉ. मु.श्री. कानडे

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org